



# MP - SET

## समाजशास्त्र

### Madhya Pradesh State Eligibility Test

### पेपर 2 || भाग - 4



# Index

## इकाई - VIII : परिवार, विवाह और नातेदारी

1.	<ul style="list-style-type: none"> <li>➤ सैद्धान्तिक उपागम: संरचना-प्रकार्यवादी, वैवाहिक बंधन और सांस्कृतिक</li> <li>➤ लिंग सम्बन्ध और शक्ति गतिकी</li> <li>➤ विरासत, उत्तराधिकार और प्राधिकार</li> <li>➤ लिंग, लैंगिकता, और प्रजनन</li> <li>➤ बच्चे, युवा और वयस्क</li> <li>➤ भावनाएं और परिवार</li> <li>➤ परिवार के उभरते रूप</li> <li>➤ विवाह की बदलती परिपाटियां</li> <li>➤ देखभाल एवं संपोषक प्रणालियों के बदलते स्वरूप</li> <li>➤ पारिवारिक कानून</li> <li>➤ घरेलू हिंसा और महिलाओं विरुद्ध अपराध</li> <li>➤ ऑनर किलिंग</li> </ul>	1
----	--	---

## इकाई - IX : विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज

2.	<ul style="list-style-type: none"> <li>➤ प्रौद्योगिकीय विकास का इतिहास</li> <li>➤ समय और स्थान की बदलती धारणाएं</li> <li>➤ प्रवाह और सीमाएं</li> <li>➤ आभासी समुदाय</li> <li>➤ मीडिया: मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक, दृश्यात्मक और सामाजिक मीडिया</li> <li>➤ ई-अभिशासन और निगरानी समाज</li> <li>➤ प्रौद्योगिकी और उभरती राजनीतिक प्रक्रियाएं</li> <li>➤ राज्य नीति, डिजिटल डिवाइड तथा समावेशन</li> <li>➤ प्रौद्योगिकी और बदलते पारिवारिक सम्बन्ध</li> <li>➤ प्रौद्योगिकी और बदलती स्वास्थ्य व्यवस्थाएं</li> <li>➤ खाद्य और प्रौद्योगिकी</li> <li>➤ साइबर अपराध</li> </ul>	75
----	--	----

## इकाई - X : संस्कृति और सांकेतिक रूपान्तरण

3.	<ul style="list-style-type: none"> <li>➤ संकेत और प्रतीक</li> <li>➤ धार्मिक अनुष्ठान, आस्थाएं और प्रथाएं</li> <li>➤ बदलती भौतिक संस्कृति</li> <li>➤ नैतिक अर्थव्यवस्था</li> <li>➤ शिक्षा: औपचारिक और अनौपचारिक</li> <li>➤ धार्मिक संगठन, धर्मनिष्ठता और आध्यात्मिकता</li> <li>➤ धार्मिक अनुष्ठानों का वस्तुकरण</li> <li>➤ साम्प्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता</li> <li>➤ सांस्कृतिक पहचान और लामबंदी</li> <li>➤ संस्कृति और राजनीति</li> <li>➤ लिंग, देह और संस्कृति</li> <li>➤ कला और सौन्दर्यबोध विज्ञान</li> <li>➤ आचारशास्त्र और नैतिकता</li> <li>➤ खेलकूद और संस्कृति</li> <li>➤ तीर्थाटन और धार्मिक पर्यटन</li> <li>➤ धर्म और अर्थव्यवस्था</li> <li>➤ संस्कृति और पर्यावरण</li> <li>➤ नूतन धार्मिक आंदोलन</li> </ul>	140
----	---	-----

# VIII UNIT

## परिवार, विवाह और नातेदारी

### 1: सैद्धांतिक दृष्टिकोण: संरचना-कार्यात्मक, गठबंधन और सांस्कृतिक

#### परिचय

संरचना-कार्यात्मक दृष्टिकोण परिवार को एक स्थिर इकाई के रूप में देखता है, गठबंधन सिद्धांत रिश्तेदारी को आदान-प्रदान की एक प्रणाली के रूप में महत्व देता है, और सांस्कृतिक दृष्टिकोण स्थानीय मानदंडों द्वारा आकार लेने वाली विविध प्रथाओं पर प्रकाश डालते हैं। ये सिद्धांत इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि परिवार और रिश्तेदारी प्रणालियाँ सामाजिक जीवन को कैसे व्यवस्थित करती हैं, रिश्तों को कैसे नियंत्रित करती हैं, और बदलाव के साथ कैसे तालमेल बिठाती हैं, खासकर भारत के विविध संदर्भ में, जहाँ संयुक्त परिवार, जाति-आधारित विवाह और क्षेत्रीय रिश्तेदारी पैटर्न एक साथ मौजूद हैं।

#### मुख्य सामग्री

##### 1. संरचना-कार्यात्मक दृष्टिकोण

एमिल दुर्खीम के कार्यों पर आधारित है, परिवार, विवाह और रिश्तेदारी को अभिन्न संस्थाओं के रूप में देखता है जो सामाजिक स्थिरता बनाए रखते हैं और आवश्यक कार्यों को पूरा करते हैं।

##### 1.1. मूल अवधारणाएँ

- **सामाजिक स्थिरता** : परिवार संरचना प्रदान करते हैं, भूमिकाओं और मानदंडों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था सुनिश्चित करते हैं।
- **कार्यात्मक भूमिकाएँ** : परिवार समाजीकरण, प्रजनन, आर्थिक सहायता और भावनात्मक देखभाल जैसे कार्य करते हैं।
- **श्रम विभाजन** : लिंग आधारित भूमिकाएँ (जैसे, पुरुष कमाने वाला, महिला देखभालकर्ता) दक्षता बढ़ाती हैं।
- **एकीकरण** : नातेदारी प्रणालियाँ व्यक्तियों को व्यापक सामाजिक नेटवर्क से जोड़ती हैं, जिससे सामंजस्य मजबूत होता है।

##### 1.2. विस्तृत विवरण

- **सामाजिक स्थिरता** : पार्सन्स का तर्क था कि परिवार स्थिर व्यक्तियों का निर्माण करने वाले "कारखानों" की तरह काम करते हैं, बच्चों को सामाजिक मानदंडों के अनुसार सामाजिक बनाते हैं। भारत में, संयुक्त परिवार संसाधनों को एकत्रित करके और जातीय सजातीय विवाह को बनाए रखकर स्थिरता को मजबूत करते हैं, जहाँ 20% परिवार अभी भी संयुक्त हैं (जनगणना, 2011)।
- **कार्यात्मक भूमिकाएँ** : परिवार बच्चों का समाजीकरण करते हैं (जैसे, सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं), श्रम का पुनरुत्पादन करते हैं (जैसे, भावी श्रमिकों का पालन-पोषण करते हैं), आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं (जैसे, साझा आय), और भावनात्मक देखभाल प्रदान करते हैं (जैसे, बुजुर्गों की देखभाल)। उदाहरण के लिए, भारतीय परिवार अक्सर बेरोज़गार युवाओं का समर्थन करते हैं, जिससे सामाजिक तनाव कम होता है।
- **श्रम विभाजन** : पार्सन्स का वाद्य (पुरुष) और अभिव्यंजक (महिला) भूमिकाओं का मॉडल पारंपरिक भारतीय परिवारों के साथ संरेखित है, जहां पुरुष कमाते हैं और महिलाएं घर का प्रबंधन करती हैं, हालांकि शहरी बदलाव इसे चुनौती देते हैं (एनएसएसओ, 2023)।
- **एकीकरण** : गोत्र प्रणाली की तरह रिश्तेदारी संबंध व्यक्तियों को कुलों से जोड़ते हैं, जिससे विवाह और समर्थन के लिए सामाजिक नेटवर्क सुनिश्चित होता है, जैसा कि उत्तर भारतीय व्यवस्थित विवाहों में देखा जाता है।

##### 1.3. समाजशास्त्रीय निहितार्थ

- **सामाजिक व्यवस्था** : दुर्खीम के कार्यात्मकतावाद के साथ संरेखित, सामंजस्य पर बल देता है।
- **असमानता** : नारीवादी आलोचकों के अनुसार, यह लैंगिक भूमिकाओं को सुदृढ़ करती है।
- **अनुकूलन** : परिवार विकसित होते हैं, क्योंकि शहरी एकल परिवार संयुक्त संरचनाओं का स्थान लेते हैं।

##### 1.4. ऐतिहासिक संदर्भ

- 1940-50 के दशक में उभरा, युद्ध के बाद के पश्चिमी पारिवारिक आदर्शों को प्रतिबिंबित करता है।
- भारत के संयुक्त परिवारों पर लागू, उनकी स्थिरकारी भूमिका पर बल दिया गया।

##### 1.5. भारतीय संदर्भ

- **संयुक्त परिवार** : ग्रामीण उत्तर प्रदेश में, 30% परिवार संयुक्त हैं, जो आर्थिक और देखभाल संबंधी भूमिकाएं साझा करते हैं (एनएसएसओ, 2023)।
- **समाजीकरण** : परिवार जातिगत मानदंडों को सिखाते हैं, जिससे 80% विवाहों में अंतर्विवाह सुनिश्चित होता है (IIPS, 2024)।

- **केस स्टडी** : पंजाब में सिख संयुक्त परिवार कृषि आय को एकत्रित करते हैं, जिससे 50% युवाओं की शिक्षा में सहायता मिलती है, जो आर्थिक कार्यों को दर्शाता है।
- 1.6. आलोचनाएँ
- **स्थैतिक दृष्टिकोण** : संघर्ष सिद्धांत के अनुसार, पारिवारिक संघर्षों और परिवर्तन को नजरअंदाज करता है।
  - **लिंग पूर्वाग्रह** : महिलाओं की एजेंसी की अनदेखी करते हुए पितृसत्तात्मक भूमिकाओं को उचित ठहराना।
  - **पश्चिमी पूर्वाग्रह** : भारत की विविध रिश्तेदारी प्रणालियों पर कम लागू।
- 1.7. प्रासंगिकता
- कार्यात्मक भूमिकाओं और भारतीय पारिवारिक संरचनाओं के लिए परीक्षण किया गया (उदाहरण के लिए, जून 2017)।
2. गठबंधन सिद्धांत
- क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस द्वारा विकसित गठबंधन सिद्धांत, विवाह और रिश्तेदारी को विनिमय की प्रणाली के रूप में देखता है जो समूहों के बीच गठबंधन के माध्यम से सामाजिक बंधन बनाता है।
- 2.1. मूल अवधारणाएँ
- **विवाह के रूप में विनिमय** : विवाह में गठबंधन बनाये जाते हैं, महिलाओं, संसाधनों या स्थिति का आदान-प्रदान किया जाता है।
  - **पारस्परिकता** : नातेदारी प्रणालियाँ पारस्परिक दायित्वों पर निर्भर करती हैं, तथा समूह सामंजस्य सुनिश्चित करती हैं।
  - **क्रॉस-कजिन विवाह** : कुछ संस्कृतियों में गठबंधन को मजबूत करने के लिए पसंद किया जाता है।
  - **संरचनात्मक पैटर्न** : नातेदारी समाज को बहिर्विवाह और अंतर्विवाह के नियमों के माध्यम से संगठित करती है।
- 2.2. विस्तृत विवरण
- **विवाह एक आदान-प्रदान के रूप में** : लेवी-स्ट्रॉस का तर्क था कि विवाह व्यक्तियों के बीच नहीं, बल्कि समूहों के बीच एक अनुबंध है, जिसमें गठबंधन बनाने के लिए महिलाओं का आदान-प्रदान होता है। भारत में, द्रविड़ धर्म में, पारिवारिक संबंधों को बनाए रखने के लिए दुल्हनों का आदान-प्रदान किया जाता है।
  - **पारस्परिकता** : विवाह संबंध दहेज या पारस्परिक सहयोग जैसे दायित्व उत्पन्न करते हैं, जैसा कि 60% भारतीय व्यवस्थित विवाहों में देखा गया है (IIPS, 2024)।
  - **क्रॉस-कजिन विवाह** : दक्षिण भारत में, 30% विवाह सगोत्रीय होते हैं, जो रिश्तेदारी के बंधन को मजबूत करते हैं (एनएफएचएस-5, 2020)।
  - **संरचनात्मक पैटर्न** : उत्तर भारत में गोत्र बहिर्विवाह और जातिगत अंतर्विवाह जैसे नियम सामाजिक सीमाओं के भीतर गठबंधन सुनिश्चित करते हैं।
- 2.3. समाजशास्त्रीय निहितार्थ
- **सामंजस्य** : कार्यात्मकता के अनुसार गठबंधन सामाजिक नेटवर्क को मजबूत करते हैं।
  - **शक्ति गतिकी** : नारीवादी आलोचकों के अनुसार, विनिमय पितृसत्ता को मजबूत करता है।
  - **सांस्कृतिक विविधता** : भारत की विविध रिश्तेदारी प्रथाओं पर प्रकाश डालता है।
- 2.4. ऐतिहासिक संदर्भ
- 1940 के दशक में विकसित, रिश्तेदारी के मानवशास्त्रीय अध्ययन पर आधारित।
  - भारत की जटिल विवाह प्रणालियों, विशेषकर द्रविड़ विवाह प्रणालियों पर लागू।
- 2.5. भारतीय संदर्भ
- **द्रविड़ रिश्तेदारी** : तमिलनाडु में, 25% विवाह क्रॉस-कजिन हैं, जो परिवारों के भीतर भूमि स्वामित्व बनाए रखते हैं (एनएफएचएस-5, 2020)।
  - **जातिगत गठबंधन** : राजस्थान में राजपूत विवाह जातिगत नेटवर्क को मजबूत करते हैं, तथा स्थिति का आदान-प्रदान करते हैं।
  - **केस स्टडी** : आंध्र प्रदेश में रेड्डी परिवार कृषि संपदा को मजबूत करने के लिए चचेरे भाई-बहनों के बीच विवाह का उपयोग करते हैं, जो गठबंधन कार्यों को दर्शाता है।
- 2.6. आलोचनाएँ
- **लिंग उपेक्षा** : महिलाओं को विनिमय की वस्तु के रूप में देखना, एजेंसी की उपेक्षा करना।
  - **संरचना पर अत्यधिक जोर** : भावनात्मक या व्यक्तिगत पहलुओं की उपेक्षा करता है।
  - **सीमित दायरा** : आधुनिक, शहरी विवाह प्रथाओं पर कम लागू।
- 2.7. प्रासंगिकता
- गठबंधन सिद्धांत और भारतीय रिश्तेदारी प्रथाओं के लिए परीक्षण किया गया (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2022)।
3. सांस्कृतिक दृष्टिकोण
- सांस्कृतिक दृष्टिकोण, लुई ड्यूमोंट और इरावती जैसे मानवविज्ञानियों से प्रेरित है कर्वे ने इस बात पर जोर दिया है कि स्थानीय मानदंड, मूल्य और प्रथाएं किस प्रकार परिवार, विवाह और रिश्तेदारी प्रणालियों को आकार देती हैं।

### 3.1. मूल अवधारणाएँ

- **सांस्कृतिक विविधता** : रिश्तेदारी क्षेत्र, धर्म और जाति के अनुसार भिन्न होती है, जो स्थानीय परंपराओं को दर्शाती है।
- **प्रतीकात्मक अर्थ** : विवाह और परिवार का सांस्कृतिक महत्व होता है, जैसे सम्मान या पवित्रता।
- **मानक नियम** : रीति-रिवाज भूमिकाओं, अनुष्ठानों और संबंधों को नियंत्रित करते हैं।
- **परिवर्तन के प्रति अनुकूलन** : आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के साथ सांस्कृतिक प्रथाएँ विकसित होती हैं।

### 3.2. विस्तृत विवरण

- **सांस्कृतिक विविधता** : भारत की नातेदारी प्रणालियाँ उत्तर भारतीय पितृवंशीय से लेकर दक्षिण भारतीय मातृवंशीय (जैसे, नायर) तक फैली हुई हैं, जो क्षेत्रीय मानदंडों से प्रभावित हैं। उदाहरण के लिए, केरल के 10% परिवार मातृवंशीय हैं (जनगणना, 2011)।
- **प्रतीकात्मक अर्थ** : विवाह जातिगत शुद्धता का प्रतीक है, 80% अंतर्विवाही विवाह (IIPS, 2024) सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करते हैं।
- **मानक नियम** : हिंदू विवाह में कन्यादान जैसे अनुष्ठान लिंग आधारित भूमिकाओं को परिभाषित करते हैं, तथा महिला अधीनता पर जोर देते हैं।
- **परिवर्तन के प्रति अनुकूलन** : शहरी भारत में 20% अंतरजातीय विवाह होते हैं, जो सांस्कृतिक बदलावों को दर्शाता है (एनएफएस-5, 2020)।

### 3.3. समाजशास्त्रीय निहितार्थ

- **पहचान** : प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के अनुसार सांस्कृतिक प्रथाएँ सामाजिक बंधनों को सुदृढ़ बनाती हैं।
- **असमानता** : संघर्ष सिद्धांत के अनुसार, मानदंड जाति और लिंग पदानुक्रम को कायम रखते हैं।
- **परिवर्तन** : आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार परिवार विकास पर प्रकाश डालता है।

### 3.4. ऐतिहासिक संदर्भ

- 20वीं सदी में भारत के मानवशास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से विकसित।
- भारत की विविध रिश्तेदारी प्रणालियों को समझने के लिए इसका प्रयोग किया गया।

### 3.5. भारतीय संदर्भ

- **क्षेत्रीय भिन्नताएं** : नागा जनजातियाँ गोत्रीय बहिर्विवाह प्रथा का पालन करती हैं, जबकि जाट गोत्र नियमों को लागू करते हैं।
- **अनुष्ठान** : हिंदू विवाह में मंगलसूत्र सांस्कृतिक मानदंडों का प्रतीक है।
- **केस स्टडी** : केरल में, नायर मातृवंशीय परिवार एकल प्रवृत्तियों को अपना रहे हैं, जिसमें 2024 तक 30% बदलाव आया (एनएसएसओ)।

### 3.6. आलोचनाएँ

- **वर्णनात्मक फोकस** : संरचनावादी आलोचकों के अनुसार, इसमें व्याख्यात्मक शक्ति का अभाव है।
- **स्थिर दृष्टिकोण** : शहरीकरण जैसे तीव्र सामाजिक परिवर्तनों को नजरअंदाज किया जा सकता है।
- **मानदंडों पर अत्यधिक जोर** : व्यक्तिगत एजेंसी और संघर्षों की उपेक्षा करता है।

### 3.7. प्रासंगिकता

- सांस्कृतिक विविधता और भारतीय विवाह प्रथाओं के लिए परीक्षण किया गया (उदाहरण के लिए, जून 2020)।

### 4. पीवाईक्यू विश्लेषण

यह खंड 2015-2025 तक के 5-10 PYQ का विश्लेषण करता है, तथा विस्तृत समाधान, रुझान और अपेक्षित भविष्य के प्रश्न प्रदान करता है।

#### 4.1. नमूना PYQ और समाधान

##### 1. जून 2017: संरचना-कार्यात्मकतावाद परिवार को इस रूप में देखता है :

- A) संघर्ष-संचालित
- B) स्थिर इकाई
- C) आर्थिक आदान-प्रदान
- D) सांस्कृतिक कलाकृति

उत्तर: B) स्थिर इकाई

**व्याख्या:** संरचना-कार्यात्मकतावाद सामाजिक स्थिरता और सामंजस्य बनाए रखने में परिवार की भूमिका पर जोर देता है, जैसा कि संयुक्त परिवारों की संरचना में देखा जाता है।

3. **दिसंबर 2022: गठबंधन सिद्धांत पर ध्यान केंद्रित करता है:**

- A) पारिवारिक भूमिकाएँ
- B) विनिमय के रूप में विवाह
- C) सांस्कृतिक मानदंड
- D) भावनात्मक बंधन

**उत्तर:** B) विनिमय के रूप में विवाह

**व्याख्या:** लेवी-स्ट्रॉस के अनुसार, गठबंधन सिद्धांत विवाह को समूहों के बीच विनिमय की एक प्रणाली के रूप में देखता है, जिसका उदाहरण क्रॉस-कजिन विवाह जैसी प्रथाओं से मिलता है।

4. **जून 2020: सांस्कृतिक दृष्टिकोण उजागर करते हैं:**

- A) सार्वभौमिक भूमिकाएँ
- B) स्थानीय विविधता
- C) आर्थिक कार्य
- D) राजनीतिक शक्ति

**उत्तर:** B) स्थानीय विविधता

**व्याख्या:** सांस्कृतिक दृष्टिकोण विभिन्न समाजों में पारिवारिक संरचनाओं और प्रथाओं की विविधता पर जोर देते हैं, जैसे कि नायर समुदाय की मातृवंशीय प्रणाली।

5. **दिसंबर 2021: पार्सन्स का प्रकार्यवाद जोर देता है:**

- A) लैंगिक समानता
- B) श्रम विभाजन
- C) जाति विविधता
- D) व्यक्तिगत पसंद

**उत्तर:** B) श्रम विभाजन

**व्याख्या:** टैल्कोट पार्सन्स का प्रकार्यवादी दृष्टिकोण परिवारों के भीतर श्रम विभाजन पर प्रकाश डालता है, जिसमें सहायक (प्रदाता) और अभिव्यंजक (पोषणकर्ता) भूमिकाएँ होती हैं।

6. **जून 2023: क्रॉस-कजिन विवाह निम्नलिखित में से किसका केंद्र है:**

- A) कार्यात्मकता
- B) गठबंधन सिद्धांत
- C) सांस्कृतिक दृष्टिकोण
- D) संघर्ष सिद्धांत

**उत्तर:** B) गठबंधन सिद्धांत

**व्याख्या:** क्रॉस-कजिन विवाह गठबंधन सिद्धांत की एक प्रमुख विशेषता है, क्योंकि यह रिश्तेदारी समूहों के बीच सामाजिक गठबंधनों को मजबूत करता है, विशेष रूप से द्रविड़ रिश्तेदारी प्रणालियों में।

4.2. प्रश्न रुझान

- **आवर्ती विषय :** कार्यात्मक भूमिकाएँ, गठबंधन विनिमय, सांस्कृतिक विविधता।
- **हालिया बदलाव :** भारतीय पारिवारिक विविधताओं और आलोचनाओं पर ध्यान केंद्रित करना।
- **कठिनाई स्तर :** प्रश्न सैद्धांतिक रूपरेखा और अनुप्रयोगों का परीक्षण करते हैं।

4.3. अपेक्षित भविष्य के प्रश्न

- कार्यात्मकता में संयुक्त परिवारों की भूमिका।
- द्रविड़ नातेदारी में गठबंधन सिद्धांत।
- भारतीय विवाह प्रथाओं में सांस्कृतिक विविधता।

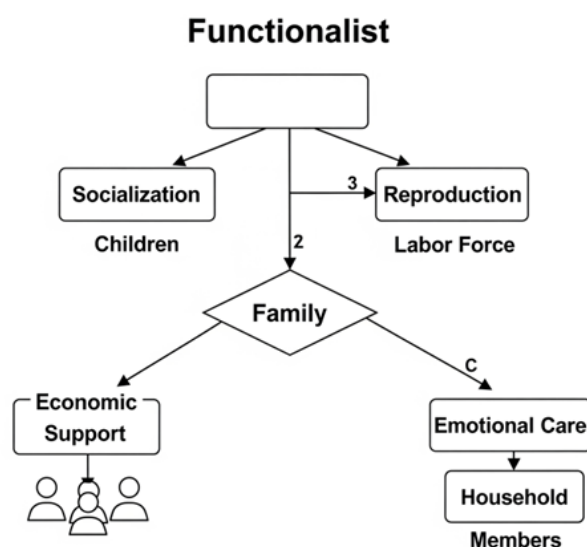
5. दृश्य सहायक सामग्री

नीचे जटिल अवधारणाओं को सरल बनाने के लिए कैप्शन और स्पष्टीकरण के साथ 4 दृश्य सहायक सामग्री दी गई है।

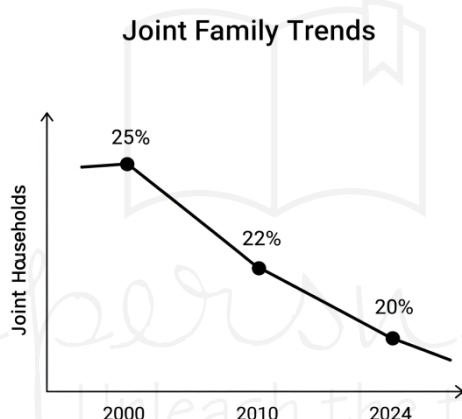
5.1. तालिका: सैद्धांतिक रूपरेखा

लिखित	मूल अवधारणा	भारतीय उदाहरण
संरचना-कार्यात्मकवादी	सामाजिक स्थिरता	संयुक्त परिवार की भूमिकाएँ
गठबंधन सिद्धांत	विनिमय के रूप में विवाह	क्रॉस-कजिन विवाह
सांस्कृतिक दृष्टिकोण	स्थानीय विविधता	नायर मातृवंश

- **स्पष्टीकरण :** सिद्धांतों का सारांश, सैद्धांतिक PYQs में सहायता।



**कैप्शन :** कार्यात्मक पारिवारिक कार्यों का फ्लोचार्ट।



- **स्पष्टीकरण :** भूमिकाओं को सरल बनाता है, प्रश्नों के लिए प्रासंगिक है।

**कैप्शन :** संयुक्त परिवार में गिरावट को दर्शाता ग्राफ (एनएसएसओ, 2024)।

- **स्पष्टीकरण :** रुझानों पर प्रकाश डाला गया, एक PYQ विषय।

5.4. तालिका: नातेदारी प्रथाएँ

अभ्यास	विवरण	उदाहरण
पितृवंशीय	पुरुष वंश	उत्तर भारतीय गोत्र
मातृवंशीय	महिला वंश	केरल नायर
पार चचेरे भाई	गठबंधन विवाह	तमिलनाडु रेड्डी

- **स्पष्टीकरण :** अभ्यासों का सारांश, सहायक प्रश्न।

6. मुख्य बिंदु

- **संरचना-कार्यात्मकतावादी :** परिवार समाज को स्थिर करता है, जैसे संयुक्त परिवार।
- **गठबंधन सिद्धांत :** विवाह आदान-प्रदान को जन्म देता है, जैसा कि चचेरे भाई-बहनों के बीच गठबंधन में होता है।
- **सांस्कृतिक दृष्टिकोण :** नायर मातृवंश की तरह विविधता पर प्रकाश डालता है।
- **संयुक्त परिवार :** एनएसएसओ के अनुसार, आर्थिक और सामाजिक भूमिकाएं निभाते हैं।
- **नातेदारी में भिन्नताएँ :** पितृवंशीय और मातृवंशीय प्रणालियाँ सह-अस्तित्व में हैं।
- **आलोचनाएँ :** सिद्धांतों को लिंग और परिवर्तन संबंधी सीमाओं का सामना करना पड़ता है।
- **हालिया रुझान :** परीक्षाओं में भारतीय विविधता पर ध्यान केंद्रित करना।
- **अंतःविषयक लिंक :** यूनिट 8 (लिंग, कानून) से जुड़ता है।

7. स्मृति सहायक और स्मृति सहायक

- **सिद्धांतों के लिए स्मृति सहायक : एसएसी** (संरचना-कार्यात्मक, गठबंधन, सांस्कृतिक)।
  - **उपयोग** : रिकॉल फ्रेमवर्क.
- **कार्यात्मक भूमिकाओं के लिए स्मृति सहायक : एसआरईई** (समाजीकरण, प्रजनन, आर्थिक, भावनात्मक)।
  - **प्रयोग** : पारिवारिक कार्यों को याद करें।
- **रिश्तेदारी के प्रकारों के लिए स्मृति सहायक : पी.एम.सी.** (पितृवंशीय, मातृवंशीय, क्रॉस-कजिन)।
  - **प्रयोग** : प्रथाओं को सरल बनाना।

8. अभ्यास प्रश्न

• **संरचना -कार्यात्मकतावाद परिवार को इस रूप में देखता है:**

- A) संघर्ष-संचालित
- B) स्थिर इकाई
- C) आर्थिक आदान-प्रदान
- D) सांस्कृतिक कलाकृति

**उत्तर:** B) स्थिर इकाई

**व्याख्या:** टैल्कोट पार्सन्स के अनुसार, संरचना-कार्यात्मकतावाद परिवार को एक स्थिर इकाई के रूप में देखता है जो सामाजिक सामंजस्य में योगदान देता है, जैसा कि संयुक्त परिवारों में उदाहरण दिया गया है।

• **गठबंधन सिद्धांत जोर देता है:**

- ए) पारिवारिक भूमिकाएँ
- बी) विनिमय के रूप में विवाह
- सी) सांस्कृतिक मानदंड
- डी) भावनात्मक बंधन

**उत्तर:** बी) विनिमय के रूप में विवाह

**स्पष्टीकरण:** क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस के अनुसार, गठबंधन सिद्धांत विवाह को रिश्तेदारी समूहों के बीच विनिमय की एक प्रणाली के रूप में महत्व देता है, जैसे कि क्रॉस-कजिन विवाह में।

• **सांस्कृतिक दृष्टिकोण किस पर ध्यान केंद्रित करते हैं:**

- A) सार्वभौमिक भूमिकाएँ
- B) स्थानीय विविधता
- C) आर्थिक कार्य
- D) राजनीतिक शक्ति

**उत्तर:** B) स्थानीय विविधता

**व्याख्या:** सांस्कृतिक दृष्टिकोण विभिन्न समाजों में पारिवारिक संरचनाओं और प्रथाओं की विविधता को उजागर करते हैं, जैसा कि नायर समुदाय की मातृसत्तात्मक प्रणाली में देखा जाता है।

• **पार्सन्स का प्रकार्यवाद रेखांकित करता है:**

- A) लैंगिक समानता
- B) श्रम विभाजन
- C) जातिगत विविधता
- D) व्यक्तिगत पसंद

**उत्तर:** B) श्रम विभाजन

**व्याख्या:** टैल्कोट पार्सन्स का प्रकार्यवादी दृष्टिकोण परिवारों के भीतर श्रम विभाजन पर जोर देता है, जिसमें साधन (प्रदाता) और अभिव्यंजक (पोषणकर्ता) भूमिकाएँ होती हैं।

• **क्रॉस-कजिन विवाह किससे संबंधित है:**

- A) प्रकार्यवाद
- B) गठबंधन सिद्धांत
- C) सांस्कृतिक दृष्टिकोण
- D) संघर्ष सिद्धांत

**उत्तर:** B) गठबंधन सिद्धांत

**व्याख्या:** क्रॉस-कजिन विवाह गठबंधन सिद्धांत के लिए केंद्रीय है, क्योंकि यह रिश्तेदारी समूहों के बीच सामाजिक गठबंधन को मजबूत करता है, विशेष रूप से द्रविड़ रिश्तेदारी प्रणालियों में।

## 9. हालिया घटनाक्रम

- **संयुक्त परिवार में गिरावट** : 20% परिवार संयुक्त हैं, जो 25% से कम है (एनएसएसओ, 2024)।
- **अंतर्जातीय विवाह** : शहरी भारत में 20% तक बढ़ गया (आईआईपीएस, 2024)।
- **मातृवंशीय बदलाव** : केरल में 30% नायर परिवार एकल हैं (एनएसएसओ, 2024)।
- **डिजिटल मैट्रिमोनी** : 50% शादियां ऑनलाइन तय की जाती हैं (Shaadi.com, 2024)।

## 2: लिंग संबंध और शक्ति गतिशीलता

### परिचय

यूजीसी नेट जेआरएफ समाजशास्त्र पाठ्यक्रम की इकाई 8: परिवार, विवाह और नातेदारी में लैंगिक संबंध और शक्ति गतिकी एक महत्वपूर्ण उप-इकाई का गठन करते हैं, जो इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि लिंग किस प्रकार पारिवारिक और नातेदारी प्रणालियों में भूमिकाओं, पदानुक्रमों और असमानताओं को आकार देता है। परिवार और विवाह ऐसे प्रमुख स्थल हैं जहाँ पितृसत्तात्मक मानदंडों, शक्ति असंतुलन और लैंगिक अपेक्षाओं पर बातचीत की जाती है, उन्हें सुदृढ़ किया जाता है या चुनौती दी जाती है। भारत में, जाति, वर्ग, धर्म और क्षेत्र के अंतर्संबंधों के कारण ये गतिकी और भी जटिल हो जाती है, जो दहेज, निर्णय लेने और संसाधन आवंटन जैसी प्रथाओं को प्रभावित करती है। नारीवादी समाजशास्त्र, अंतर्संबंध और संघर्ष सिद्धांत जैसे सैद्धांतिक ढाँचे इन मुद्दों का विश्लेषण करने के लिए लेंस प्रदान करते हैं, जबकि भारत का संदर्भ—जो निरंतर लैंगिक असमानता, दहेज-संबंधी हिंसा और उभरती महिला एजेंसी द्वारा चिह्नित है—उनकी प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

### मुख्य सामग्री

#### 1. लिंग संबंधों और शक्ति गतिशीलता के लिए सैद्धांतिक रूपरेखा

लिंग संबंध परिवारों और नातेदारी प्रणालियों में पुरुषों और महिलाओं के बीच सामाजिक अंतःक्रियाओं को संदर्भित करते हैं, जो मानदंडों, भूमिकाओं और शक्ति संरचनाओं द्वारा आकार लेते हैं। शक्ति गतिकी यह बताती है कि अधिकार, संसाधन और निर्णय लेने की प्रक्रिया किस प्रकार वितरित की जाती है, अक्सर असमान रूप से। समाजशास्त्रीय सिद्धांत इन गतिकी को समझने के लिए महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

#### 1.1. नारीवादी समाजशास्त्र

वाल्बी और सिमोन डी बोउवार जैसे विद्वानों के कार्यों पर आधारित है, परिवारों में पितृसत्तात्मक संरचनाओं की आलोचना करता है, तथा इस बात पर बल देता है कि किस प्रकार लैंगिक असमानताएं बनी रहती हैं और रिश्तेदारी प्रणालियों के भीतर उन्हें चुनौती दी जाती है।

#### • मूल अवधारणाएँ :

- **पितृसत्ता** : पारिवारिक संरचनाओं में पुरुष का प्रभुत्व, संसाधनों, भूमिकाओं और निर्णय लेने पर नियंत्रण।
- **श्रम का लिंग आधारित विभाजन** : महिलाओं को घरेलू और देखभाल संबंधी भूमिकाएं सौंपी जाती हैं, जबकि पुरुष आर्थिक और आधिकारिक पदों पर होते हैं।
- **शक्ति असंतुलन** : पारिवारिक निर्णयों पर पुरुषों का नियंत्रण महिलाओं को हाशिये पर धकेलता है, उनकी स्वतंत्रता को सीमित करता है।
- **प्रतिरोध और एजेंसी** : महिलाएं बातचीत, सक्रियता या आर्थिक स्वतंत्रता के माध्यम से पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देती हैं।
- **विस्तृत विवरण :**
  - **पितृसत्ता** : वाल्बी की निजी पितृसत्ता की अवधारणा इस बात पर प्रकाश डालती है कि परिवार किस प्रकार पुरुष नियंत्रण के केंद्र होते हैं, जहाँ पुरुष ही घरेलू निर्णयों पर हावी होते हैं। भारत में, 70% ग्रामीण परिवार पितृसत्तात्मक मानदंडों का पालन करते हैं, जहाँ पुरुष संपत्ति के उत्तराधिकारी होते हैं और परिवार का नेतृत्व करते हैं (एनएसएसओ, 2023)।
  - **श्रम का लैंगिक विभाजन** : महिलाएं 80% अवैतनिक घरेलू कार्य करती हैं, पुरुषों के 1 घंटे की तुलना में घरेलू कार्यों पर प्रतिदिन 6 घंटे खर्च करती हैं (एनएसएसओ समय उपयोग सर्वेक्षण, 2020), पारंपरिक भूमिकाओं को मजबूत करती हैं।
  - **शक्ति असंतुलन** : 60% भारतीय घरों में, पुरुष प्रमुख वित्तीय निर्णयों को नियंत्रित करते हैं, जबकि महिलाएं छोटे खर्चों का प्रबंधन करती हैं, जिससे उनका अधिकार सीमित हो जाता है (एनएफएचएस-5, 2020)।
  - **प्रतिरोध और एजेंसी** : तमिलनाडु में महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) में 10 लाख महिलाएं शामिल हैं, जिससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ी है, जिससे 2024 तक 30% महिलाएं पारिवारिक निर्णयों को प्रभावित करने में सक्षम हो गई हैं (एनआरएलएम, 2024)।
- **समाजशास्त्रीय निहितार्थ :**
  - **असमानता** : पितृसत्ता संघर्ष सिद्धांत के साथ संरेखित होकर लैंगिक असमानता को कायम रखती है।
  - **एजेंसी** : नारीवादी दृष्टिकोण के अनुसार, महिलाओं का प्रतिरोध सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है।
  - **सामाजिक परिवर्तन** : आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देता है।

- **ऐतिहासिक संदर्भ :**

- 1970 के दशक में दूसरी लहर के नारीवाद के दौरान उभरा, जिसमें परिवार को पितृसत्तात्मक संस्था के रूप में आलोचना की गई।
- भारत की लैंगिक गतिशीलता, विशेष रूप से दहेज और घरेलू भूमिकाओं पर लागू।

- **भारतीय संदर्भ :**

- **पितृसत्ता :** उत्तर प्रदेश में 80% विवाह दहेज से जुड़े हैं, जो पुरुष वर्चस्व को मजबूत करता है (आईआईपीएस, 2024)।
- **श्रम विभाजन :** राजस्थान में ग्रामीण महिलाएं जल संग्रहण का प्रबंधन करती हैं, तथा प्रतिदिन 5 घंटे काम करती हैं, जबकि पुरुष खेतों में काम करते हैं।
- **केस स्टडी :** केरल में, कुदुम्बश्री (2024) के अंतर्गत महिला स्वयं सहायता समूहों ने 100,000 महिलाओं को घरेलू भूमिकाओं के लिए सशक्त बनाया, जिससे पितृसत्तात्मक नियंत्रण कम हुआ।

- **आलोचनाएँ :**

- **सार्वभौमिकता :** सांस्कृतिक विविधताओं की अनदेखी करते हुए पितृसत्ता को अतिसामान्यीकृत किया जा सकता है।
- **पुरुषों की उपेक्षा :** लिंग मानदंडों को चुनौती देने में पुरुषों की भूमिका को नजरअंदाज करना।
- **वर्ग पूर्वाग्रह :** मध्यम वर्ग के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है, आदिवासी या दलित महिलाओं को दरकिनार करता है।

- **प्रासंगिकता :**

- पितृसत्ता और महिलाओं की एजेंसी के लिए अक्सर परीक्षण किया जाता है (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2020)।

1.2. अंतःक्रियाशीलता

किम्बर्ल क्रेनशॉ द्वारा विकसित इंटरसेक्शनैलिटी , इस बात की जांच करती है कि लिंग किस प्रकार जाति, वर्ग, धर्म और अन्य पहचानों के साथ अंतःक्रिया करता है, जिससे परिवारों में शक्ति गतिशीलता और असमानताएं आकार लेती हैं।

- **मूल अवधारणाएँ :**

- **बहुविध उत्पीड़न :** महिलाओं को लिंग, जाति, वर्ग और जातीयता के आधार पर अनेक प्रकार के नुकसानों का सामना करना पड़ता है, जिससे पारिवारिक भूमिकाएं प्रभावित होती हैं।
- **शक्ति पदानुक्रम :** अन्तर्विभाजक पहचानें रिश्तेदारी प्रणालियों के भीतर जटिल पदानुक्रम बनाती हैं।
- **विभेदक पहुंच :** हाशिए पर रहने वाली महिलाओं की पारिवारिक संसाधनों और निर्णय लेने तक कम पहुंच होती है।
- **प्रतिरोध रणनीतियाँ :** अंतर्विभागीय आंदोलन जटिल असमानताओं को संबोधित करते हैं, समावेशी परिवर्तन की वकालत करते हैं।

- **विस्तृत विवरण :**

- **बहुविध उत्पीड़न :** बिहार में दलित महिलाओं को लैंगिक भेदभाव, जातिगत बहिष्कार और आर्थिक हाशिए पर धकेले जाने का सामना करना पड़ता है, जिससे उच्च जाति की महिलाओं की तुलना में उनके घरेलू अधिकार सीमित हो जाते हैं (एनएचआरसी, 2024)।
- **शक्ति पदानुक्रम :** राजपूत परिवारों में, उच्च जाति की महिलाओं के पास प्रतीकात्मक शक्ति (जैसे, अनुष्ठानों का प्रबंधन) हो सकती है, लेकिन उनके पास आर्थिक नियंत्रण का अभाव होता है, जबकि दलित महिलाओं में दोनों का अभाव होता है (IIPS, 2024)।
- **विभेदक पहुंच :** भारत में केवल 13% महिलाओं के पास भूमि है, आदिवासी और दलित महिलाओं के पास 5% से भी कम भूमि है, जिससे उनके परिवार पर प्रभाव सीमित हो जाता है (कृषि जनगणना, 2022)।
- **प्रतिरोध रणनीतियाँ :** तमिलनाडु में दलित महिलाओं के समूहों ने (2024) जाति-लिंग बहिष्कार को संबोधित करते हुए 10,000 परिवारों के लिए जल अधिकार सुरक्षित किए।

- **समाजशास्त्रीय निहितार्थ :**

- **जटिलता :** संघर्ष सिद्धांत के अनुसार सूक्ष्म असमानताओं पर प्रकाश डालता है।
- **समावेशन :** नारीवादी समाजशास्त्र के अनुसार, विविध आवाजों की वकालत।
- **सामाजिक न्याय :** आलोचनात्मक समाजशास्त्र के अनुसार, प्रणालीगत बहिष्कार को चुनौती।

- **ऐतिहासिक संदर्भ :**

- 1980 के दशक में उभरा, संयुक्त राज्य अमेरिका में अश्वेत महिलाओं के अनुभवों को संबोधित करते हुए।
- भारत की जाति-लिंग गतिशीलता पर लागू, विशेष रूप से 1990 के दशक के बाद।

- **भारतीय संदर्भ :**

- **उत्पीड़न :** झारखंड में आदिवासी महिलाओं को तिहरे हाशिये का सामना करना पड़ता है, उन्हें वन संसाधनों और पारिवारिक निर्णयों से वंचित रखा जाता है।
- **पहुँच :** धार्मिक मानदंडों के कारण दिल्ली की मलिन बस्तियों में मुस्लिम महिलाओं की पारिवारिक आय तक पहुँच हिंदू महिलाओं की तुलना में 20% कम है (एनएफएचएस-5, 2020)।
- **केस स्टडी :** महाराष्ट्र में, दलित महिला स्वयं सहायता समूहों (2024) ने 5,000 महिलाओं को दहेज पर बातचीत करने के लिए सशक्त बनाया, जिससे जाति-लिंग शक्ति गतिशीलता को चुनौती मिली।

- **आलोचनाएँ :**
  - **जटिलता :** नीति या अनुसंधान में क्रियान्वयन कठिन।
  - **पहचान पर अत्यधिक जोर :** संरचनात्मक आर्थिक कारकों की उपेक्षा हो सकती है।
  - **सीमित पुरुष फोकस :** पुरुषों के अंतर्विषयक अनुभवों की उपेक्षा करता है।
- **प्रासंगिकता :**
  - जाति-लिंग अंतरसंबंध और प्रतिरोध के लिए परीक्षण किया गया (उदाहरण के लिए, जून 2023)।
- 1.3. संघर्ष सिद्धांत
 

संघर्ष सिद्धांत, जो कार्ल मार्क्स के कार्यों में निहित है और जिसे हेड्डी हार्टमैन जैसे नारीवादी विद्वानों द्वारा अपनाया गया है, परिवारों को संसाधनों, भूमिकाओं और अधिकार पर शक्ति संघर्ष के स्थल के रूप में देखता है, जो लिंग और वर्ग गतिशीलता द्वारा आकार लेते हैं।
- **मूल अवधारणाएँ :**
  - **संसाधन नियंत्रण :** पुरुष परिवार के संसाधनों (जैसे, संपत्ति, आय) पर हावी हो जाते हैं, जिससे लिंग आधारित संघर्ष पैदा होता है।
  - **सत्ता संघर्ष :** पारिवारिक भूमिकाएं और निर्णय लिंगों के बीच प्रतिस्पर्धा को दर्शाते हैं, जो अक्सर पुरुषों के पक्ष में होते हैं।
  - **शोषण :** महिलाओं का अवैतनिक घरेलू श्रम पारिवारिक अर्थव्यवस्था को आर्थिक सहायता प्रदान करता है, जिससे असमानता को बल मिलता है।
  - **संघर्ष के माध्यम से परिवर्तन :** लैंगिक समानता संघर्षों से उभरती है, जैसे कानूनी सुधार या सक्रियता।
- **विस्तृत विवरण :**
  - **संसाधन नियंत्रण :** 70% भारतीय घरों में, पुरुष भूमि और प्रमुख संपत्तियों को नियंत्रित करते हैं, जबकि महिलाएं दैनिक खर्चों का प्रबंधन करती हैं, जिससे संसाधन-आधारित तनाव पैदा होता है (एनएफएस-5, 2020)।
  - **सत्ता संघर्ष :** उत्तर प्रदेश में दहेज विवाद के कारण प्रतिवर्ष 2,000 मौतें होती हैं, जो आर्थिक नियंत्रण को लेकर संघर्ष को दर्शाता है (एनसीआरबी, 2023)।
  - **शोषण :** महिलाओं का अवैतनिक श्रम, जिसका मूल्य भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 7% है, परिवारों का समर्थन करता है लेकिन इसे मान्यता नहीं मिलती (एनएसएसओ, 2020)।
  - **संघर्ष के माध्यम से परिवर्तन :** घरेलू हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा अधिनियम (2005) नारीवादी सक्रियता का परिणाम है, जो 2024 तक 1 मिलियन महिलाओं की सुरक्षा करेगा (एमडब्ल्यूसीडी, 2024)।
- **समाजशास्त्रीय निहितार्थ :**
  - **असमानता :** मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार, लिंग आधारित शोषण पर प्रकाश डालता है।
  - **परिवर्तन :** संघर्ष सिद्धांत के अनुसार, संघर्ष सामाजिक प्रगति को प्रेरित करते हैं।
  - **शक्ति :** नारीवादी आलोचकों के अनुसार, परिवार को एक विवादित स्थान के रूप में उजागर करती है।
- **ऐतिहासिक संदर्भ :**
  - 19वीं सदी में उभरा, 1970 के दशक में लिंग के अनुकूल बना।
  - भारत के पारिवारिक सत्ता संघर्षों, विशेषकर दहेज और हिंसा पर लागू।
- **भारतीय संदर्भ :**
  - **नियंत्रण :** पंजाब में 90% कृषि भूमि पर पुरुषों का नियंत्रण है, जिससे महिलाओं की आर्थिक शक्ति सीमित हो जाती है।
  - **संघर्ष :** 2024 में घरेलू हिंसा के मामलों में 10% की वृद्धि हुई, जो शक्ति संघर्ष को दर्शाता है (एनसीआरबी)।
  - **केस स्टडी :** दिल्ली में दहेज उत्पीड़न के खिलाफ महिलाओं के विरोध प्रदर्शन (2024) के कारण सख्त प्रवर्तन हुआ, जिससे 10,000 पीड़ितों को सहायता मिली।
- **आलोचनाएँ :**
  - **संघर्ष पर अत्यधिक जोर :** कार्यात्मकता के अनुसार पारिवारिक सहयोग की उपेक्षा की जाती है।
  - **वर्ग-केन्द्रित :** जाति या धार्मिक गतिशीलता की उपेक्षा कर सकते हैं।
  - **एजेंसी की उपेक्षा :** महिलाओं की सूक्ष्म प्रतिरोध रणनीतियों को कम करके आंकना।
- **प्रासंगिकता :**
  - सत्ता संघर्ष और दहेज के मुद्दों के लिए परीक्षण किया गया (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2021)।
- 2. भारतीय परिवारों में लैंगिक संबंध
 

भारतीय परिवारों में लैंगिक संबंध पितृसत्तात्मक मानदंडों, सांस्कृतिक प्रथाओं और सामाजिक परिवर्तन से प्रभावित होते हैं, जो भूमिकाओं, जिम्मेदारियों और शक्ति गतिशीलता को प्रभावित करते हैं।
- 2.1. पितृसत्तात्मक पारिवारिक संरचनाएँ
  - **मूल अवधारणाएँ :**

- **पुरुष प्राधिकार** : निर्णय लेने, उत्तराधिकार और संसाधन नियंत्रण में पुरुषों का प्रभुत्व होता है।
  - **महिला अधीनता** : महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे घरेलू भूमिकाओं और पारिवारिक सम्मान को प्राथमिकता दें।
  - **सांस्कृतिक सुदृढ़ीकरण** : पितृसत्ता और दहेज जैसे मानदंड पितृसत्ता को कायम रखते हैं।
  - **विस्तृत विवरण** :
    - **पुरुष प्राधिकार** : 80% उत्तर भारतीय घरों में, पुरुष प्रमुख खरीदारी का निर्णय लेते हैं, जबकि महिलाएं रसोई का प्रबंधन करती हैं (एनएफएचएस-5, 2020)।
    - **महिला अधीनता** : राजस्थान में महिलाओं को पर्दा प्रथा का सामना करना पड़ता है, जिससे 40% घरों में उनकी गतिशीलता सीमित हो जाती है (आईआईपीएस, 2024)।
    - **सांस्कृतिक सुदृढ़ीकरण** : 70% विवाहों में दिया जाने वाला दहेज, महिलाओं की आर्थिक निर्भरता को मजबूत करता है (एनसीआरबी, 2023)।
  - **भारतीय संदर्भ** :
    - **उत्तर प्रदेश** : 90% परिवार पितृस्थानीय निवास का पालन करते हैं, तथा दुल्हनों को अधीनस्थ रखते हैं।
    - **केस स्टडी** : हरियाणा में जाट परिवार पुरुष अधिकार को लागू करते हैं, जहां 80% महिलाओं को काम के लिए अनुमति की आवश्यकता होती है (2024, IIPS)।
- 2.2. लैंगिक भूमिकाएँ और श्रम
- **मूल अवधारणाएँ** :
    - **घरेलू श्रम** : महिलाएं बिना वेतन के घरेलू कार्य करती हैं, जिससे आर्थिक अवसर सीमित हो जाते हैं।
    - **देखभाल** : महिलाएं बच्चों और बुजुर्गों की प्राथमिक देखभाल करती हैं, तथा उन्हें समय की कमी का सामना करना पड़ता है।
    - **आर्थिक भूमिकाएँ** : महिलाओं का वेतनभोगी कार्य पारंपरिक भूमिकाओं को चुनौती देता है, लेकिन प्रतिरोध का सामना भी करना पड़ता है।
  - **विस्तृत विवरण** :
    - **घरेलू श्रम** : महिलाएं प्रतिदिन 6 घंटे घरेलू काम पर खर्च करती हैं, जिसका मूल्य यदि मुद्रीकृत किया जाए तो सालाना 10 ट्रिलियन रुपये होगा (एनएसएसओ, 2020)।
    - **देखभाल** : 70% घरों में, महिलाएं बुजुर्गों की देखभाल करती हैं, जिससे कार्यबल में उनकी भागीदारी घटकर 25% रह जाती है (एनएसएसओ, 2023)।
    - **आर्थिक भूमिकाएँ** : शहरी महिलाओं का रोजगार 2024 में 30% तक बढ़ जाएगा, लेकिन 50% को पारिवारिक विरोध का सामना करना पड़ेगा (नैसकॉम, 2024)।
  - **भारतीय संदर्भ** :
    - **केरल** : उच्च साक्षरता के बावजूद महिलाएं 80% घरेलू देखभाल का प्रबंधन करती हैं (एनएफएचएस-5)।
    - **केस स्टडी** : बेंगलुरु में, आईटी महिलाएं (2024) कार्य भूमिकाओं पर बातचीत करती हैं, जिनमें से 40% अपने पति के साथ घरेलू कार्यों को साझा करती हैं।
- 2.3. महिला एजेंसी और प्रतिरोध
- **मूल अवधारणाएँ** :
    - **बातचीत** : महिलाएं बातचीत और आर्थिक योगदान के माध्यम से भूमिकाओं को चुनौती देती हैं।
    - **सक्रियतावाद** : नारीवादी आंदोलन परिवारों में लैंगिक समानता की वकालत करते हैं।
    - **कानूनी सुधार** : कानून महिलाओं को पितृसत्तात्मक नियंत्रण का विरोध करने के लिए सशक्त बनाते हैं।
  - **विस्तृत विवरण** :
    - **बातचीत** : 30% शहरी परिवारों में, महिलाएं आय के कारण पारिवारिक निर्णयों को प्रभावित करती हैं (एनएफएचएस-5, 2020)।
    - **सक्रियता** : गुजरात में SEWA के अभियानों (2024) ने 50,000 महिलाओं को दहेज का विरोध करने के लिए सशक्त बनाया।
    - **कानूनी सुधार** : हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम (2005) ने महिलाओं को समान उत्तराधिकार प्रदान किया, जिससे 2024 तक 1 मिलियन महिलाओं को लाभ होगा (एमडब्ल्यूसीडी)।
  - **भारतीय संदर्भ** :
    - **तमिलनाडु** : स्वयं सहायता समूहों ने 40% घरों में महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि की।
    - **केस स्टडी** : पंजाब में घरेलू हिंसा के खिलाफ महिलाओं के विरोध प्रदर्शन (2024) के परिणामस्वरूप पीडब्ल्यूडीवीए के तहत 5,000 लोगों को सजा हुई।
3. भारतीय नातेदारी में शक्ति गतिशीलता
- भारतीय रिश्तेदारी प्रणालियों में शक्ति की गतिशीलता संसाधनों, अधिकार और भूमिकाओं पर संघर्ष को दर्शाती है, जो लिंग, जाति और वर्ग द्वारा आकार लेती है।

### 3.1. दहेज और आर्थिक शक्ति

- **मूल अवधारणाएँ :**

- **दहेज नियंत्रण के रूप में :** यह पुरुष के आर्थिक प्रभुत्व को मजबूत करता है, जिससे संघर्ष उत्पन्न होता है।
- **हिंसा :** दहेज विवाद के कारण उत्पीड़न और मौतें होती हैं।
- **प्रतिरोध :** कानूनी और सामाजिक अभियान दहेज संबंधी मानदंडों को चुनौती देते हैं।
- **केस स्टडी :** उत्तर प्रदेश में 2024 दहेज विरोधी अभियानों से मामलों में 10% की कमी आई (एनसीआरबी)।

### 3.2. निर्णय लेना और अधिकार

- **मूल अवधारणाएँ :**

- **पुरुष प्रभुत्व :** परिवार के प्रमुख निर्णयों पर पुरुषों का नियंत्रण होता है।
- **जातिगत पदानुक्रम :** उच्च जाति के पुरुषों के पास अधिक अधिकार होते हैं।
- **महिलाओं का प्रभाव :** आर्थिक योगदान से महिलाओं की आवाज बढ़ती है।
- **केस स्टडी :** दिल्ली में, शहरी महिलाओं की आय (2024) ने 30% घरों (आईआईपीएस) में उनके निर्णय लेने की क्षमता में वृद्धि की।

### 3.3. जाति और लिंग अंतर

- **मूल अवधारणाएँ :**

- **बहिष्कार :** दलित महिलाओं को जाति-लिंग आधार पर हाशिये पर धकेला जाता है।
- **प्रतिरोध :** दलित आंदोलन पारिवारिक पदानुक्रम को चुनौती देते हैं।
- **सांस्कृतिक मानदंड :** जातिगत अंतर्विवाह शक्ति संरचनाओं को मजबूत करता है।
- **केस स्टडी :** महाराष्ट्र में दलित महिलाओं के 2024 के विरोध प्रदर्शन से 5,000 लोगों को उत्तराधिकार का अधिकार मिला।

### 4. पीवाईक्यू विश्लेषण

यह खंड 2015-2025 तक के 5-10 PYQ का विश्लेषण करता है, तथा विस्तृत समाधान, रुझान और अपेक्षित भविष्य के प्रश्न प्रदान करता है।

#### 4.1. नमूना PYQ और समाधान

**Q. दिसंबर 2020: नारीवादी समाजशास्त्र आलोचना :**

- A) पारिवारिक सद्भाव
- B) पितृसत्ता
- C) आर्थिक समानता
- D) सांस्कृतिक विविधता

**उत्तर:** B) पितृसत्ता

**व्याख्या:** नारीवादी समाजशास्त्र समाज के भीतर पुरुष प्रभुत्व और पितृसत्तात्मक संरचनाओं की आलोचना पर केंद्रित है, जैसा कि भारत में दहेज जैसी प्रथाओं द्वारा उदाहरण दिया गया है।

**Q. जून 2023: इंटरसेक्शनलिटी जांच करती है:**

- A) केवल लिंग
- B) बहु उत्पीड़न
- C) आर्थिक विकास
- D) शहरीकरण

**उत्तर:** B) बहु उत्पीड़न

**स्पष्टीकरण:** एक ढांचे के रूप में अंतर्विभागीयता विश्लेषण करती है कि उत्पीड़न के विभिन्न रूप (जैसे लिंग, जाति, वर्ग) किस प्रकार अंतर्संबंधित होते हैं, जैसा कि दलित महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले बहिष्कार में देखा जा सकता है।

**Q. दिसंबर 2021: संघर्ष सिद्धांत परिवार को इस रूप में देखता है:**

- A) स्थिर इकाई
- B) सत्ता संघर्ष
- C) सांस्कृतिक प्रणाली
- D) आर्थिक आदान-प्रदान

**उत्तर:** B) सत्ता संघर्ष

**व्याख्या:** मार्क्सवादी दृष्टिकोण में निहित संघर्ष सिद्धांत, परिवार को सदस्यों के बीच सत्ता संघर्ष और संसाधन संघर्ष के स्थल के रूप में देखता है, असमानता पर जोर देता है।

Q. जून 2020: भारत में दहेज दर्शाता है:

- A) लैंगिक समानता
- B) पितृसत्तात्मक नियंत्रण
- C) आर्थिक सद्भाव
- D) सांस्कृतिक विविधता

उत्तर: B) पितृसत्तात्मक नियंत्रण

व्याख्या: भारत में दहेज की प्रथा परिवारों के भीतर पुरुष वर्चस्व और पितृसत्तात्मक नियंत्रण को मजबूत करती है, जिससे लैंगिक असमानता बनी रहती है।

Q. दिसंबर 2022: भारत में महिला स्वयं सहायता समूह (SHG) बढ़ावा देते हैं :

- A) पितृसत्ता
- B) एजेंसी
- C) जाति मानदंड
- D) शहरीकरण

उत्तर: B) एजेंसी

व्याख्या: भारत में कुटुम्बश्री जैसे महिला SHG, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक सशक्तिकरण और सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा देकर महिलाओं की एजेंसी को बढ़ावा देते हैं।

5. दृश्य सहायक सामग्री

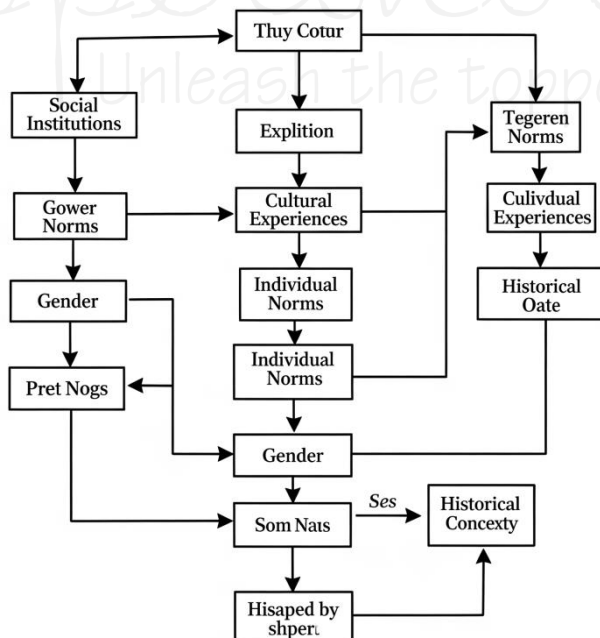
नीचे जटिल अवधारणाओं को सरल बनाने के लिए कैप्शन और स्पष्टीकरण के साथ 4 दृश्य सहायक सामग्री दी गई है।

5.1. तालिका: सैद्धांतिक रूपरेखा

लिखित	मूल अवधारणा	भारतीय उदाहरण
नारीवादी समाजशास्त्र	पितृसत्ता	उत्तर प्रदेश में दहेज
अंतःक्रियाशीलता	अनेक उत्पीड़न	बिहार में दलित महिलाएं
संघर्ष सिद्धांत	सत्ता संघर्ष	पंजाब में घरेलू हिंसा

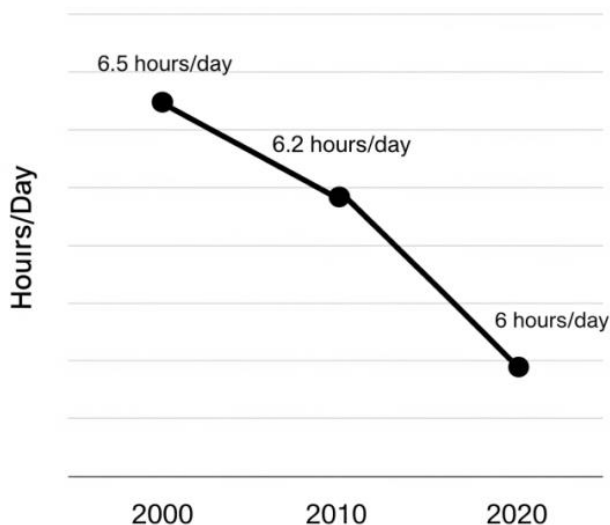
- स्पष्टीकरण : सिद्धांतों का सारांश, सैद्धांतिक PYQs में सहायता।

### Gender Power Dynamics



- कैप्शन : भारत में लिंग शक्ति गतिशीलता का फ्लोचार्ट।
- स्पष्टीकरण : गतिशीलता को सरल करता है, प्रश्नों के लिए प्रासंगिक है।

## WOMEN'S DOMESTIC LABOUR



**कैप्शन :** महिलाओं के श्रम बोझ को दर्शाने वाला ग्राफ (एनएसएसओ, 2020)।

- **स्पष्टीकरण :** रुझानों पर प्रकाश डाला गया, एक PYQ विषय।

5.4. तालिका: लैंगिक मुद्दे

मुद्दा	विवरण	उदाहरण
दहेज	आर्थिक नियंत्रण	उत्तर प्रदेश में मौतें
घरेलू श्रम	अवैतनिक कार्य	राजस्थान में पानी की उपलब्धता
निर्णय लेना	पुरुष प्रभुत्व	पंजाब भूमि नियंत्रण

- **स्पष्टीकरण :** मुद्दों, सहायक प्रश्नों का सारांश।
- 6. मुख्य बिंदु
  - **नारीवादी समाजशास्त्र :** दहेज प्रथा के मामले में पितृसत्ता की आलोचना।
  - **अंतर्विभागीयता :** जाति-लिंग को संबोधित करती है, जैसे दलित महिलाओं में।
  - **संघर्ष सिद्धांत :** घरेलू हिंसा के अनुसार परिवार को शक्ति संघर्ष के रूप में देखता है।
  - **पितृसत्ता :** एनएफएचएस-5 के अनुसार, 70% घरों पर हावी है।
  - **महिला एजेंसी :** एनआरएलएम के अनुसार, स्वयं सहायता समूह 1 मिलियन को सशक्त बनाते हैं।
  - **दहेज :** एनसीआरबी के अनुसार, प्रतिवर्ष 2,000 मौतें होती हैं।
  - **हालिया रुझान :** परीक्षाओं में अंतर्संबंध और एजेंसी पर ध्यान केंद्रित करना।
  - **अंतःविषयक लिंक :** यूनिट 8 (कानून, हिंसा) से जुड़ता है।
- 7. स्मृति सहायक और स्मृति सहायक
  - **सिद्धांतों के लिए स्मृति सहायक :** एफआईसी (नारीवादी, अंतर्विभागीयता, संघर्ष)।
  - **उपयोग :** रिकॉल फ्रेमवर्क.
  - **लिंग संबंधी मुद्दों के लिए स्मृति सहायक :** डीडीएल (दहेज, घरेलू श्रम, निर्णय लेना)।
  - **उपयोग :** मुद्दों को याद करें।
  - **प्रतिरोध के लिए स्मृति सहायक :** एनएएल (बातचीत, सक्रियता, कानूनी)।
  - **उपयोग :** रणनीतियों को सरल बनाएं।
- 8. अभ्यास प्रश्न

नीचे UGC NET प्रारूप के अनुरूप 5 वस्तुनिष्ठ प्रकार के MCQ उत्तर और स्पष्टीकरण सहित दिए गए हैं।

प्रश्न: **नारीवादी समाजशास्त्र की आलोचना :**

- पारिवारिक सद्भाव
- पितृसत्ता
- आर्थिक समानता
- सांस्कृतिक विविधता

उत्तर: B) पितृसत्ता

**व्याख्या :** नारीवादी समाजशास्त्र समाज के भीतर पुरुष प्रभुत्व और पितृसत्तात्मक संरचनाओं की आलोचना पर केंद्रित है।

प्रश्न: अंतर्विभागीयता किस पर केंद्रित है:

- A) केवल लिंग
- B) बहुल उत्पीड़न
- C) आर्थिक विकास
- D) शहरीकरण

उत्तर: B) बहुल उत्पीड़न

**स्पष्टीकरण:** अंतर्विषयकता इस बात की जांच करती है कि उत्पीड़न के विभिन्न रूप, जैसे लिंग, जाति और वर्ग, किस प्रकार एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, जैसा कि दलित महिलाओं के अनुभवों में देखा जा सकता है।

प्रश्न: संघर्ष सिद्धांत परिवार को इस रूप में देखता है:

- A) स्थिर इकाई
- B) शक्ति संघर्ष
- C) सांस्कृतिक प्रणाली
- D) आर्थिक विनिमय

उत्तर: B) शक्ति संघर्ष

**स्पष्टीकरण:** संघर्ष सिद्धांत परिवार के भीतर संघर्षों पर प्रकाश डालता है, इसे संसाधनों और अधिकार पर शक्ति संघर्ष के स्थल के रूप में देखता है।

प्रश्न: दहेज दर्शाता है:

- A) लैंगिक समानता
- B) पितृसत्तात्मक नियंत्रण
- C) आर्थिक सद्भाव
- D) सांस्कृतिक विविधता

उत्तर: B) पितृसत्तात्मक नियंत्रण

**व्याख्या:** दहेज की प्रथा पुरुष प्रभुत्व और पितृसत्तात्मक नियंत्रण को मजबूत करती है, जिससे लैंगिक असमानता बनी रहती है।

प्रश्न: स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) बढ़ावा देते हैं :

- A) पितृसत्ता
- B) एजेंसी
- C) जातिगत मानदंड
- D) शहरीकरण

उत्तर: B) एजेंसी

**स्पष्टीकरण:** महिला स्वयं सहायता समूह, जैसे कुटुम्बश्री, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक सशक्तीकरण को बढ़ावा देकर महिलाओं की एजेंसी को बढ़ावा देते हैं।

9. हालिया घटनाक्रम

- **एसएचजी वृद्धि :** 1 मिलियन महिलाएं एसएचजी में शामिल हुईं, एजेंसी में वृद्धि (एनआरएलएम, 2024)।
- **दहेज के मामले :** अभियानों के कारण 10% की गिरावट (एनसीआरबी, 2024)।
- **महिला रोजगार :** शहरी महिलाओं की कार्यबल भागीदारी बढ़कर 30% हो गई (नैसकॉम, 2024)।
- **डिजिटल सक्रियता :** 100,000 महिलाएं ऑनलाइन हिंसा विरोधी अभियानों में शामिल हुईं (2024)।

### 3: विरासत, उत्तराधिकार और अधिकार

परिचय

उत्तराधिकार पीढ़ियों के बीच संपत्तियों के हस्तांतरण को नियंत्रित करता है, उत्तराधिकार भूमिकाओं या उपाधियों के आवंटन को निर्धारित करता है, और अधिकार यह निर्धारित करता है कि निर्णय लेने की शक्ति किसके पास है। भारत में, ये प्रक्रियाएँ विविध कानूनी, सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों द्वारा आकार लेती हैं, जिनमें पितृवंशीय और मातृवंशीय व्यवस्थाएँ, जातिगत पदानुक्रम और लैंगिक असमानताएँ शामिल हैं। संरचना-कार्यात्मकता, संघर्ष सिद्धांत और नारीवादी समाजशास्त्र जैसे सैद्धांतिक ढाँचे इन गतिशीलताओं का विश्लेषण करने के लिए लेंस प्रदान करते हैं, जबकि भारत का संदर्भ—जिसमें हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, नायरों के बीच मातृवंशीय प्रथाएँ और पारिवारिक अधिकार पर विवाद शामिल हैं—उनके महत्व को उजागर करता है।

## मुख्य सामग्री

1. विरासत, उत्तराधिकार और अधिकार के लिए सैद्धांतिक रूपरेखा  
विरासत, उत्तराधिकार और अधिकार परिवार और नातेदारी व्यवस्थाओं के केंद्र में हैं, जो संसाधनों के वितरण, भूमिका निरंतरता और सत्ता संरचनाओं को निर्धारित करते हैं। समाजशास्त्रीय सिद्धांत इन प्रक्रियाओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।
- 1.1. संरचना-कार्यात्मक परिप्रेक्ष्य  
एमिल दुर्खीम के कार्यों में निहित है, विरासत, उत्तराधिकार और अधिकार को ऐसे तंत्र के रूप में देखता है जो पारिवारिक स्थिरता और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखते हैं।
  - **मूल अवधारणाएँ :**
    - **सामाजिक स्थिरता :** विरासत और उत्तराधिकार परिवार के संसाधनों और भूमिकाओं की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं, तथा विघटन को रोकते हैं।
    - **कार्यात्मक भूमिकाएँ :** प्राधिकरण संरचनाएं जिम्मेदारियाँ सौंपती हैं, जिससे परिवार की कार्यक्षमता बढ़ती है।
    - **मानक नियम :** सांस्कृतिक और कानूनी मानदंड संचरण को नियंत्रित करते हैं, तथा पूर्वानुमान सुनिश्चित करते हैं।
    - **एकीकरण :** नातेदारी प्रणालियाँ परिवारों को उत्तराधिकार और अधिकार के माध्यम से व्यापक सामाजिक नेटवर्क से जोड़ती हैं।
  - **विस्तृत विवरण :**
    - **सामाजिक स्थिरता :** पार्सन्स का तर्क था कि उत्तराधिकार पारिवारिक संपत्ति को बनाए रखता है और आर्थिक ढाँचे को स्थिर करता है। भारत में, 80% हिंदू परिवारों में पितृवंशीय उत्तराधिकार भूमि की निरंतरता सुनिश्चित करता है और कृषि अर्थव्यवस्थाओं को सहारा देता है (एनएसएसओ, 2023)।
    - **कार्यात्मक भूमिकाएँ :** अधिकार, जो प्रायः पुरुष बुजुर्गों के पास होता है, कमाने वाले या देखभाल करने वाले जैसी भूमिकाएँ सौंपता है, जैसा कि संयुक्त परिवारों में देखा जाता है, जहां 20% परिवार निर्णयों के लिए कुलपतियों पर निर्भर रहते हैं (जनगणना, 2011)।
    - **मानक नियम :** हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम (1956, संशोधित 2005) संपत्ति विभाजन को नियंत्रित करता है, तथा बेटों और बेटियों के लिए समान हिस्सेदारी सुनिश्चित करता है, जो 70% हिंदू परिवारों पर लागू होता है (एमडब्ल्यूसीडी, 2024)।
    - **एकीकरण :** उत्तर भारत में गोत्र वंशों की तरह रिश्तेदारी नेटवर्क, जातिगत गठबंधनों को बनाए रखने के लिए विरासत का उपयोग करते हैं, जिसमें 80% विवाह अंतर्विवाही होते हैं (IIPS, 2024)।
  - **समाजशास्त्रीय निहितार्थ :**
    - **सामंजस्य :** कार्यात्मकता के अनुसार पारिवारिक एकता को सुदृढ़ करता है।
    - **असमानता :** नारीवादी आलोचकों के अनुसार, यह लिंग और जातिगत पदानुक्रम को कायम रख सकती है।
    - **अनुकूलन :** मानदंड विकसित होते हैं, जैसा कि कानूनी सुधारों में देखा गया है।
  - **ऐतिहासिक संदर्भ :**
    - 1940-1950 के दशक में उभरा, जो युद्ध के बाद की पारिवारिक स्थिरता की चिंताओं को दर्शाता है।
    - भारत के संयुक्त परिवारों पर लागू संसाधन निरंतरता में उनकी भूमिका पर बल दिया गया।
  - **भारतीय संदर्भ :**
    - **स्थिरता :** पंजाब में, संयुक्त परिवार की खेती पुरुष उत्तराधिकार पर निर्भर करती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि 50% कृषि भूमि बरकरार रहे (कृषि जनगणना, 2022)।
    - **अधिकार :** राजस्थान में, राजपूत मुखिया पारंपरिक भूमिकाओं को बनाए रखते हुए 90% पारिवारिक निर्णयों को नियंत्रित करते हैं (IIPS, 2024)।
    - **केस स्टडी :** उत्तर प्रदेश में, हिंदू परिवारों (2024) ने आर्थिक भूमिकाओं को स्थिर करते हुए, पैतृक संपत्ति को भाई-बहनों के बीच समान रूप से विभाजित करने के लिए हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम का उपयोग किया।
  - **आलोचनाएँ :**
    - **स्थैतिक दृष्टिकोण :** संघर्ष सिद्धांत के अनुसार, विरासत पर संघर्ष को नजरअंदाज करता है।
    - **लिंग पूर्वाग्रह :** महिलाओं की भूमिका की अनदेखी करते हुए पुरुष अधिकार को उचित ठहराना।
    - **पश्चिमी पूर्वाग्रह :** भारत की विविध प्रणालियों पर कम लागू।
  - **प्रासंगिकता :**
    - कार्यात्मक भूमिकाओं और कानूनी ढाँचों के लिए अक्सर परीक्षण किया जाता है (उदाहरण के लिए, जून 2018)।
- 1.2. संघर्ष सिद्धांत  
संघर्ष सिद्धांत, जिसे कार्ल मार्क्स से अनुकूलित किया गया है और फ्रेडरिक एंगेल्स जैसे विद्वानों द्वारा विस्तारित किया गया है, उत्तराधिकार, विरासत और अधिकार को संसाधनों और नियंत्रण पर शक्ति संघर्ष के स्थल के रूप में देखता है, जो लिंग, जाति और वर्ग द्वारा आकार लेते हैं।

- **मूल अवधारणाएँ :**
  - **संसाधन नियंत्रण :** प्रभावशाली समूह (जैसे, पुरुष, उच्च जातियाँ) उत्तराधिकार पर नियंत्रण रखते हैं, तथा दूसरों को हाशिए पर धकेल देते हैं।
  - **सत्ता संघर्ष :** उत्तराधिकार विवाद अधिकार और संपत्ति पर संघर्ष को दर्शाते हैं।
  - **शोषण :** महिलाओं और निचली जातियों को संसाधनों से वंचित रखा जाता है, जिससे असमानता बढ़ती है।
  - **संघर्ष के माध्यम से परिवर्तन :** कानूनी और सामाजिक सुधार संघर्षों से उभरते हैं, समानता को बढ़ावा देते हैं।
- **विस्तृत विवरण :**
  - **संसाधन नियंत्रण :** 70% भारतीय पितृवंशीय परिवारों में, पुरुषों को भूमि विरासत में मिलती है, जबकि महिलाओं के पास केवल 13% कृषि संपत्ति है, जिससे लिंग आधारित संघर्ष पैदा होता है (कृषि जनगणना, 2022)।
  - **सत्ता संघर्ष :** संयुक्त परिवारों में उत्तराधिकार विवाद, जैसे कि व्यापारिक साम्राज्यों को लेकर विवाद (जैसे, अंबानी बंधुओं का 2005 में रिलायंस विभाजन), अधिकार के लिए प्रतिस्पर्धा को उजागर करते हैं।
  - **शोषण :** बिहार में दलित महिलाओं को पारिवारिक संपत्ति का 5% से भी कम हिस्सा विरासत में मिलता है, जिससे उन्हें जाति-लिंग बहिष्कार का सामना करना पड़ता है (एनएचआरसी, 2024)।
  - **संघर्ष के माध्यम से परिवर्तन :** नारीवादी सक्रियता के कारण 2005 में हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम में संशोधन हुआ, जिससे बेटियों को समान अधिकार प्राप्त हुए, जिससे 2024 तक 1 मिलियन महिलाओं को लाभ मिलेगा (एमडब्ल्यूसीडी, 2024)।
- **समाजशास्त्रीय निहितार्थ :**
  - **असमानता :** मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार संसाधन असमानताओं पर प्रकाश डालता है।
  - **परिवर्तन :** संघर्ष सिद्धांत के अनुसार, संघर्ष प्रगति को प्रेरित करते हैं।
  - **शक्ति :** नारीवादी आलोचकों के अनुसार, परिवार को एक विवादित स्थान के रूप में उजागर करती है।
- **ऐतिहासिक संदर्भ :**
  - 19वीं सदी में उभरा, 1970 के दशक में परिवार के लिए अनुकूलित।
  - भारत के उत्तराधिकार विवादों, विशेषकर लिंग और जाति पर लागू।
- **भारतीय संदर्भ :**
  - **नियंत्रण :** हरियाणा में जाट पुरुषों के पास 95% भूमि पर नियंत्रण है, जिसमें महिलाएं शामिल नहीं हैं।
  - **संघर्ष :** दिल्ली की अदालतों में उत्तराधिकार के 10% मामले भाई-बहन के विवाद से जुड़े हैं (2024, MWCD)।
  - **केस स्टडी :** महाराष्ट्र में दलित महिलाओं के विरोध प्रदर्शन (2024) ने जातिगत बहिष्कार को चुनौती देते हुए 5,000 लोगों के लिए उत्तराधिकार अधिकार सुरक्षित किए।
- **आलोचनाएँ :**
  - **संघर्ष पर अत्यधिक जोर :** कार्यात्मकता के अनुसार पारिवारिक सहयोग की उपेक्षा की जाती है।
  - **वर्ग-केन्द्रित :** जाति या धार्मिक गतिशीलता की उपेक्षा कर सकते हैं।
  - **एजेंसी की उपेक्षा :** सूक्ष्म प्रतिरोध रणनीतियों को कम करके आंकना।
- **प्रासंगिकता :**
  - उत्तराधिकार विवादों और लैंगिक असमानता के लिए परीक्षण किया गया (उदाहरण के लिए, दिसंबर 2021)।
- 1.3. नारीवादी समाजशास्त्र
 

नारीवादी समाजशास्त्र, सिल्विया वाल्बी और बीना जैसे विद्वानों से प्रेरणा लेकर अग्रवाल ने पितृसत्तात्मक विरासत, उत्तराधिकार और अधिकार संरचनाओं की आलोचना की है, तथा महिलाओं के हाशिए पर होने और प्रतिरोध पर जोर दिया है।
- **मूल अवधारणाएँ :**
  - **पितृसत्तात्मक उत्तराधिकार :** पुरुष-प्रधान व्यवस्था महिलाओं को संपत्ति और अधिकार से वंचित रखती है।
  - **लिंग आधारित उत्तराधिकार :** पुरुषों को उत्तराधिकारी के रूप में प्राथमिकता दी जाती है, जिससे महिलाओं की भूमिका हाशिए पर चली जाती है।
  - **अधिकार असंतुलन :** पितृसत्ता परिवार के निर्णयों को नियंत्रित करती है, जिससे महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित हो जाती है।
  - **नारीवादी प्रतिरोध :** कानूनी सुधार और सक्रियता परिवारों में लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं।
- **विस्तृत विवरण :**
  - **पितृसत्तात्मक उत्तराधिकार :** 80% हिंदू पितृवंशीय परिवारों में, बेटों को पैतृक संपत्ति विरासत में मिलती है, जबकि बेटियों को दहेज मिलता है, जिसका मूल्य सालाना 5 ट्रिलियन रुपये है (एनसीआरबी, 2023)।
  - **लिंग आधारित उत्तराधिकार :** राजपूत परिवारों में, पुरुष उत्तराधिकारी परिवार के मुखिया के रूप में उत्तराधिकारी बनते हैं, तथा केवल 5% महिलाएं ही अधिकारिक भूमिकाएं निभाती हैं (IIPS, 2024)।

- **प्राधिकरण असंतुलन** : 60% ग्रामीण परिवारों में, पुरुष प्रमुख पारिवारिक मामलों का निर्णय लेते हैं, जबकि महिलाएं घरेलू कार्यों का प्रबंधन करती हैं (एनएफएचएस-5, 2020)।
- **नारीवादी प्रतिरोध** : नारीवादी सक्रियता से प्रेरित 2005 के हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम संशोधन ने बेटियों को समान अधिकार प्रदान किए, जो 2024 तक 70% मामलों में लागू होंगे (एमडब्ल्यूसीडी)।
- **समाजशास्त्रीय निहितार्थ** :
  - **असमानता** : संघर्ष सिद्धांत के अनुसार पितृसत्ता लैंगिक असमानता को कायम रखती है।
  - **एजेंसी** : नारीवादी समाजशास्त्र के अनुसार, महिला सक्रियता सशक्तिकरण को बढ़ावा देती है।
  - **सामाजिक परिवर्तन** : आधुनिकीकरण सिद्धांत के अनुसार कानूनी सुधार मानदंडों को चुनौती देते हैं।
- **ऐतिहासिक संदर्भ** :
  - 1970 के दशक में उभरे इस लेख में परिवार को पितृसत्तात्मक संस्था के रूप में आलोचना की गई।
  - भारत के लिंग-आधारित उत्तराधिकार और अधिकार संबंधी मुद्दों पर लागू।
- **भारतीय संदर्भ** :
  - **उत्तराधिकार** : उत्तर प्रदेश में केवल 10% महिलाओं को ही भूमि का उत्तराधिकार प्राप्त है, तथा उन्हें पुरुषों के विरोध का सामना करना पड़ता है।
  - **अधिकार** : केरल में, नायर मातृवंशीय परिवार महिलाओं को पितृवंशीय मानदंडों की तुलना में 30% अधिक अधिकार प्रदान करते हैं।
  - **केस स्टडी** : तमिलनाडु में, महिला स्वयं सहायता समूहों (2024) ने पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देते हुए 10,000 बेटियों के लिए उत्तराधिकार सुरक्षित किया।
- **आलोचनाएँ** :
  - **सार्वभौमिकता** : मातृसत्तात्मक व्यवस्था की अनदेखी करते हुए पितृसत्ता को अतिसामान्यीकृत किया जा सकता है।
  - **पुरुषों की उपेक्षा** : समानता के प्रयासों में पुरुषों की भूमिका की उपेक्षा।
  - **वर्ग पूर्वाग्रह** : मध्यम वर्ग के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है, आदिवासी महिलाओं को दरकिनार करता है।
- **प्रासंगिकता** :
  - लिंग आधारित विरासत और नारीवादी सुधारों के लिए परीक्षण किया गया (उदाहरण के लिए, जून 2020)।
- 2. भारतीय परिवारों में उत्तराधिकार
 

उत्तराधिकार, भारत में कानूनी, सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंडों द्वारा निर्धारित, पीढ़ियों के बीच संपत्ति, संपदा और परिसंपत्तियों के हस्तांतरण को नियंत्रित करता है।
- 2.1. पितृवंशीय विरासत
  - **मूल अवधारणाएँ** :
    - **पुरुष वरीयता** : पुत्रों को पारिवारिक संपत्ति विरासत में मिलती है, जिससे पितृसत्ता मजबूत होती है।
    - **मुआवजे के रूप में दहेज** : बेटियों को विरासत के स्थान पर दहेज मिलता है।
    - **कानूनी सुधार** : हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम (2005) बेटियों को समान अधिकार प्रदान करता है।
  - **विस्तृत विवरण** :
    - **पुरुष वरीयता** : 80% हिंदू परिवारों में, बेटों को भूमि विरासत में मिलती है, जो 87% कृषि संपत्ति को नियंत्रित करते हैं (कृषि जनगणना, 2022)।
    - **दहेज** : 70% विवाहों में दहेज दिया जाता है, दहेज बेटियों के लिए विरासत का स्थान ले लेता है, जिसकी लागत प्रतिवर्ष 5 ट्रिलियन रुपये होती है (एनसीआरबी, 2023)।
    - **कानूनी सुधार** : 2005 का संशोधन बेटियों की समान हिस्सेदारी सुनिश्चित करता है, जो 70% हिंदू परिवारों में लागू है (एमडब्ल्यूसीडी, 2024)।
  - **भारतीय संदर्भ** :
    - **पंजाब** : सिख परिवार भूमि के लिए बेटों को प्राथमिकता देते हैं, जहां 90% उत्तराधिकार पुरुषों को मिलता है।
    - **केस स्टडी** : हरियाणा में 2024 अदालती फैसलों से बेटियों के अधिकार लागू हुए, जिससे 5,000 महिलाओं को लाभ हुआ।
- 2.2. मातृवंशीय विरासत
  - **मूल अवधारणाएँ** :
    - **महिला वरीयता** : मातृवंशीय व्यवस्था में बेटियों को संपत्ति विरासत में मिलती है।
    - **सांस्कृतिक मानदंड** : मातृवंश महिलाओं की आर्थिक शक्ति को संरक्षित करता है।
    - **गिरावट** : शहरीकरण मातृवंशीय प्रथाओं को कम करता है।

- **विस्तृत विवरण :**
    - **महिला वरीयता :** केरल के नायर परिवारों में, बेटियों को तरावड़ संपत्ति विरासत में मिलती है, जो घरेलू संपत्ति के 30% हिस्से पर नियंत्रण रखती है (जनगणना, 2011)।
    - **सांस्कृतिक मानदंड :** पितृवंशीय मानदंडों के विपरीत, मातृस्थानीयता महिलाओं के अधिकार को सुनिश्चित करती है।
    - **गिरावट :** केरल के केवल 10% परिवार मातृसत्तात्मक रह गए हैं, तथा 30% एकल परिवारों में स्थानांतरित हो रहे हैं (एनएसएसओ, 2024)।
  - **भारतीय संदर्भ :**
    - **मेघालय :** खासी महिलाओं को विरासत में मिली जमीन, परिवार की 40% संपत्ति का प्रबंधन करती हैं।
    - **केस स्टडी :** केरल में, नायर महिलाओं (2024) ने एकल प्रवृत्ति का विरोध करते हुए 5,000 परिवारों में मातृवंशीय अधिकारों को बरकरार रखा।
- 2.3. आदिवासी और प्रथागत उत्तराधिकार
- **मूल अवधारणाएँ :**
    - **समुदाय-आधारित :** आदिवासी प्रणालियाँ सामूहिक स्वामित्व को प्राथमिकता देती हैं।
    - **लिंग समानता :** कुछ जनजातियाँ महिलाओं को उत्तराधिकार का अधिकार प्रदान करती हैं।
    - **कानूनी संघर्ष :** प्रथागत कानून वैधानिक कानूनों से टकराते हैं।
  - **विस्तृत विवरण :**
    - **समुदाय आधारित :** झारखंड में, संथाल जनजातियाँ सामूहिक रूप से भूमि साझा करती हैं, जिसमें 80% सामुदायिक नियंत्रण में है (एमओटीए, 2024)।
    - **लैंगिक समानता :** छत्तीसगढ़ में गोंड महिलाओं को 20% मामलों में वन संसाधन विरासत में मिलते हैं।
    - **कानूनी संघर्ष :** एफआरए (2006) प्रथागत अधिकारों को मान्यता देता है, लेकिन केवल 20% दावों में महिलाएं शामिल हैं (एमओटीए, 2024)।
  - **भारतीय संदर्भ :**
    - **ओडिशा :** डोंगरिया कोंध महिलाओं को एन.टी.एफ.पी. अधिकार विरासत में मिले हैं।
    - **केस स्टडी :** छत्तीसगढ़ में बैगा महिलाओं (2024) ने 5,000 एफआरए टाइटल हासिल किए, जिससे उत्तराधिकार अधिकार में वृद्धि हुई।
3. भारतीय नातेदारी में उत्तराधिकार और अधिकार
- उत्तराधिकार भूमिका और उपाधि हस्तांतरण को निर्धारित करता है, जबकि प्राधिकार निर्णय लेने की शक्ति को परिभाषित करता है, जो लिंग, जाति और सांस्कृतिक मानदंडों द्वारा निर्धारित होती है।
- 3.1. उत्तराधिकार पैटर्न
- **मूल अवधारणाएँ :**
    - **ज्येष्ठाधिकार :** पितृवंशीय व्यवस्था में सबसे बड़े पुरुष को अधिकार प्राप्त होता है।
    - **मातृवंशीय उत्तराधिकार :** चुनिंदा समुदायों में महिला उत्तराधिकारी उत्तराधिकारी बनती हैं।
    - **विवाद :** भूमिकाओं और परिसंपत्तियों को लेकर उत्तराधिकार संबंधी विवाद उत्पन्न होते हैं।
  - **केस स्टडी :** राजस्थान में, राजपूत परिवारों (2024) को परिवार के मुखियापन को लेकर 1,000 उत्तराधिकार विवादों का सामना करना पड़ा।
- 3.2. प्राधिकरण संरचनाएं
- **मूल अवधारणाएँ :**
    - **पितृसत्तात्मक सत्ता :** पारिवारिक निर्णयों पर पुरुषों का प्रभुत्व होता है।
    - **महिलाओं का प्रभाव :** आर्थिक योगदान से महिलाओं का अधिकार बढ़ता है।
    - **जातिगत गतिशीलता :** उच्च जाति के पुरुषों के पास अधिक शक्ति होती है।
  - **केस स्टडी :** दिल्ली में, शहरी महिलाओं की आय (2024) ने 30% घरों (आईआईपीएस) में अधिकार बढ़ाया।
- 3.3. कानूनी और सामाजिक सुधार
- **मूल अवधारणाएँ :**
    - **हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम :** महिलाओं को समान अधिकार प्रदान करता है।
    - **सक्रियता :** नारीवादी अभियान पुरुष सत्ता को चुनौती देते हैं।
    - **चुनौतियाँ :** सांस्कृतिक प्रतिरोध सुधार के प्रभाव को सीमित करता है।
  - **केस स्टडी :** तमिलनाडु में, एसएचजी (2024) ने 10,000 महिलाओं को अधिकारिक भूमिकाएं प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाया।